भगवत् कृपा

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संगपत्रिका

वर्ष-13, अंक-10-11 सोमवार, 26 नवं. '90	सम्पादक : साधु मुकुंदजीवनदास गुरु ज्ञानजीवनदासजी अक्टूबर-नवंबर 1980	वार्षिक चन्दा-10.00 प्रति अंक : 1.00

ब्रह्मप्रवाह

.....हम भजन का ही जोर रखें। अब पू.बापा ही जब उठायेंगे तब कुछ सिमटेगा। हमें कोई नई कोशिश करनी नहीं है....तब तक में हमारा पूरा ही कर लेना है।

.....सो, सभी सिर्फ बापा की ओर ही दृष्टि रखकर—**संकल्पों बंद करके** पहले प्रकरण की पहली, आखिरी, तीसरे की 142 वगैरा बातों का रहस्य घूंट कर पाँच पाईन्ट के मुताबिक भजन की लगनी रखना। बाकी पू. बापा ही ठीकठाक कर देंगे।

.....**हमें तो आत्मा (गुणातीत) और परमात्मा (सहजानंदस्वामी के प्रत्यक्ष स्वरूप का—पू. बापा के दिव्य स्वरूप का) अपरोक्ष-साक्षात् अनुभव** जीव में करना है और देह रहते हुए ही अक्षरधाम का अखंड सुख लेना है व कायम रखकर गुरु की ही मर्जी के मुताबिक जीवन जीना है, तो प्रकृति पुरुष तक का या मुक्तों की माया का जरा भी आवरण नड़े ही नहीं ऐसा पक्का ज्ञान सिद्ध कर लेना है। तुम उसी रास्ते पर हो और निर्दोष हो—तो जरूर-जरूर-जरूर होगा ही। इसलिए बल रहना व **प्रकरण 4 की बातों की पारायण** अनुकूलता पर कर लेना। बहुत ही बल मिलेगा.....

प.पू. काकाजी महाराज
14 अगस्त' 67

****

मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी

एक बार अठारह साधु एक साथे बीमार हो गये। उन साधुओं की सेवा में रहने को कोई भी तैयार नहीं था। बीमार साधुओं की सेवा करे ऐसे तो एक ही साधु थे—गुणातीतानंदस्वामी ! अतः महाराज बोलेः 'उस भादरावाले साधु को बुलाओ, वह साधु इन साधुओं की सेवा में रहेगा।' महाराज का आज्ञावचन सुनकर स्वामिश्री महाराज के पास आये और दंडवत् करके खड़े रहे। महाराज ने स्वामी को पूछा : 'तुम बीमार साधुओं की सेवा में रहोगे?' तब स्वामी बोले कि 'हाँ महराज ! मैं रहूँगा।'

स्वामिश्री तो बीमार साधुओं की सेवा चाकरी में लग गये। जिसको जो खाना चाहिए वह बना देते। उनको नहलाते-धुलाते, उनके झूठे बर्तन साफ करते, संतों की चद्दरें धो देते.....इस प्रकार अनेक प्रकार से सेवा करते।

बीमार साधुओं की चद्दरों के साथ अच्छी तबियत वाले साधु भी अपनी चद्दरें घुलने दे देते....लेकिन **स्वामिश्री के लिए तो 'सेवा' वही धर्म** ! उनको तो जो भी जो काम सौंपता वह कर देते। अच्छी तबियत वाले साधुओं को चद्दरें भी धो देते।

एक बार स्वामिश्री तालाब से ढेर चद्दरें धोकर, अपने कंधों पर डालकर आ रहे थे। इतने में सामने से महाराज किसी हरिभक्त के घर से खाना खाकर आ रहे थे। रास्ते में महाराज व स्वामिश्री की नजर आमने सामने मिल गई। स्वामिश्री ने तो महाराज की मूर्ति वृत्ति द्वारा खींच ली। **महाराज की मूर्ति ही तो स्वामिश्री का प्राण थी।** काफी देर तक दोनों वहीं खड़े रहे।

तब महाराज ने पूछा : 'साधुराम ! अब जायें?'

स्वामिश्री ने हाथ जोड़कर कहाः 'हाँ महाराज पधारो।'

सामने चौक में ही सभा का आयोजन था। महाराज सीधे सभा में पहुँचे, परन्तु महाराज का सारा बदन पसीने से तरबतर था। इसलिए भगुजी तथा बापू रतनजी महाराज को पंखा झलने लगे। महाराज पंखा बंद कराके एकदम जोर से बोलेः

'मुझे किसी का काम नहीं है, उस साधु के कंधों पर से ढेर चद्दरों का भार उतार लो।'

यह सुनकर भक्त तुरन्त दौड़े और स्वामिश्री के दोनों कंधों से धोई हुई चद्दरें उतार लीं और महाराज के पास लाकर रख दीं। फिर महाराज बोलेः

''जाओ साधुओं को बोलो कि जिस-जिस की चद्दर हो वह यहाँ आकर ले जायें।'

बीमार साधु तो एक-एक आकर अपनी चद्दर ले गये, परन्तु जिन अच्छी तबियत वाले साधुओं ने अपनी चद्दरें धोने डाली थीं। वे किस मुँह से महाराज के सामने लेने जायें? सो वे अपनी चद्दरें लेने नहीं आये.....

फिर महाराज ने स्वामिश्री को सद्. मुक्तानंदस्वामी के पास बिठाया और सद्. मुक्तानंदस्वामी व सद्. ब्रह्मानंदस्वामी को पूछाः 'यह साधु (गुणातीतानंदस्वामी की ओर इशारा करके) कैसे है?'

तब उन दोनों सद्गुरुओं ने जवाब दिया :

'यह तो बहुत अच्छे साधु हैं। सेवा भी सबकी बहुत करते हैं, तपस्या करते हैं, कीर्तन खूब अच्छे गाते हैं, बातें भी बहुत अच्छी करते हैं।'

महाराज ये सुनकर थोड़ा हँसे और फिर कहाः 'यह तो आपने इनके बाहरी गुण कहे, पर इनके असली गुण तो अभी भी आप लोग नहीं जानते। यह साधु तो महासमर्थ हैं। संडासी में जैसे साँप को पकड़ा जाता है, वैसी यह साधु हमारी मूर्ति आठों प्रहर-जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति, तीनों अवस्थाओं में—माता के गर्भ में आने से पहले, माता के गर्भ में और अभी भी पकड़े रखता है।'

यह सुनकर सभा में बैठे महानुभावानंदस्वामी एकदम बोल उठेः

'बेटी का बाप ! महाराज को क्यों पकड़ता है? छोड़ दो !'

महाराज यह अटपटे शब्द सुनकर हँसे और बोलेः

'स्वामी ! उसका हमें दुःख नहीं है। वह तो हमें यूं अखण्ड देखता है और दूसरों को तो उस ढंग से हमारी मूर्ति को देखना अति कठिन है। यह साधु तो हमारे अनादि के सेवक मूल अक्षरब्रह्म हैं। आज हमारे पीछे जितने मनुष्य फिरते हैं, उतने मनुष्य इस साधु के पीछे फिरेंगे और इस साधु द्वारा ही हमारी सर्वोपरि उपासना सारे सत्संग में फैलेगी। यह साधु जैसी हमारी अद्भुत महिमा जानता है वैसी कोई दूसरा नहीं जानता।'

इस प्रकार स्वामिश्री की अद्भुत महिमा महाराज ने सभा में गाई। सद्. मुक्तानंदस्वामी व संतों यह सुनकर खूब ही राजी हुए। बाद में सद्. मुक्तानंदस्वामी ने महाराज को कहाः 'हे महाराज ! ये साधु (स्वामिश्री) काफी समय से मेरे साथ रहते हैं, मेरी सेवा करते हैं पर उनकी ऐसी महिमा मैं जानता नहीं था। आपने आज दया करके उनकी महिमा बताई, वह बहुत ही अच्छा किया, क्योंकि हम तो उनको सेवक जानकर अब तक उनके पास स्वयं की सेवा कराते थे।' बाद में महाराज ने सभा को विसर्जित कर दी।

दूसरे दिन सद्. मुक्तानंदस्वामी खाना खाने बैठे। उनके पास बैठे स्वामिश्री अपना पत्तर लेकर आये और सद्. मुक्तानंदस्वामी से प्रसादी माँगी। तब सद्. मक्तानंदस्वामी ने कहाः

'स्वामी अब नहीं दूँगा। मैं बहुत दिन तक भूल भूलैया में रहा। अब वो दिन गये, अब भूलभूलैया में नहीं रहूँगा। ऐसी स्वामिश्री की महिमा समझकर उन्हें प्रसादी नहीं दी।

महाराज ने स्वामिश्री की वास्तविक महिमा अगर नहीं समझाई होती, तो शायद स्वामिश्री के छुपे स्वरूप को कोई यथार्थ पहचान नहीं पाता और स्वामिश्री ने भी ऐसा जीवन जीकर यह साबित कर दिया कि निर्दोषबुद्धि व दिव्यभाव रखकर अहोभाव से करी 'सेवा' ही प्रभु की प्रसन्नता हमें दिला सकती है। धन्य-धन्य संत गुणातीत की निर्दोषबुद्धि से की हुई सेवा को.....

* * *

अलविदा..... !

गुणातीत समाज की गंगोत्री रूप ताड़देव (बम्बई) साधना मन्दिर में ब्रह्मस्वरूप प.पू. काकाजी के नवयोगेश्वरों में अग्रणीय व अंतेवासी सेवक पू. रमेश भाई सोनी ने अचानक 15 अक्तूबर की रात को 3.30 बजे हम सबके बीच में स्थूल रूप से विदाई ली। उन्हें काफी समय से हृदय व किडनी की बीमारी की वजह से तकलीफ थी, फिर भी स्वयं की देह को गिने बिना रात-दिन भक्तों की सेवा करने में, सभी में आत्मीयता से रसबस होने में ही जीवन की सार्थकता मानी थी। समर्पण, प्रेम, सर्वदेशीयता, आत्मीयता जैसे गुणों से सहज ही स्वयं के वर्तन से वह सबके दिल को छू जाते थे। प.पू. काकाजी तो उन्हें ''सत्संग की माँ'' कहते थे। दिल्ली में पू. गुरुजी के प्रति उन्हें विशेष लगाव था। दिल्ली का केन्द्र शुरु होने के बाद पू. गुरुजी का एक भी जन्मदिन ऐसा नहीं गया होगा जिस पर पू. रमेशभाई पहले से ही महोत्सव की तैयारी करने ना आ गये हों और दिल्ली आकर हर प्रकार से पू. गुरुजी को निश्चिंत न कर दिया हो। उनकी कमी को पूरा करना तो असंभव है, पर जैसा कि प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी ने कहा है कि **1992–योगी शताब्दी महोत्सव में पू. रमेशभाई खूब सेवा करेंगे**...उनके वचन में विश्वास रखकर हम प्रार्थना करें–हे काकाजी ! हम सभी को पू. रमेशभाई जैसे गुण बक्षिश में देना।

* * *

स्वामी की बातें

148. स्वामी बोले—साधु के पास आता ही कौन है? जो कोई साधु के पास आये, उसे तो किसी बात की कसर रहे ही नहीं।....ऐसा सत्संग मिला है, परन्तु समागम के बिना किसी को ख्याल नहीं पड़ता व जब तक सत्पुरुष का संग नहीं हुआ, तब तक कुछ नहीं हुआ.....

प्र-3,48

149. ऐसे साधु में रहकर भगवान दर्शन देते हैं, बातें करते हैं, मिलते हैं व हमारी ओर देखते हैं, इस प्रकार अनेक प्रकार से सुख देते हैं।

प्र-3,53

150. जैसे सूर्य की किरणों से रात्रि का नाश हो जाता है, वैसे ही सत्पुरुष की दृष्टि से तो कहीं भी अज्ञान रहे ही नहीं.....
....बाद में ऐसा जोग मिलना बहुत दुर्लभ है। इसलिये समागम तो कर लेना।

प्र-3,54

151. एक दिन महाराज को चार प्रश्न पूछे—उसमें एक तो ध्यान करना, दूसरा आत्मारूप बर्तना, तीसरा बीमारों की सेवा करना और चौथा भगवान की बातें करना—इन चारों में से कौन का साधन अधिक श्रेष्ठ है वह बताओ? तब महाराज ने बताया कि भगवान की बातें करना सबसे अधिक श्रेष्ठ है। बस, उस दिन से बातें करनी शुरु की हैं। रात दिन, नागा नहीं पड़ने दी, जिससे जीव ब्रह्मरूप हो जाता है।

प्र-3,36

152. —सत्पुरुष का संग तो मन, कर्म, वचन द्वारा ही करना चाहिए। मन, कर्म, वचन द्वारा संग कैसे करना?.....कर्म यानि देह से तो सत्पुरुष जैसा कहे वैसा करना व वचन से सत्पुरुष के अनंत गुण गाया करना व मन में बड़े साधु के प्रति नास्तिक भाव आने नहीं देना। तब मानना कि बड़े संत का मन, कर्म, वचन द्वारा संग करा है....

प्र-3,60

153. जैसे-जैसे ज्ञान होता जाता है वैसे-वैसे भगवान की महिमा समझ में आती जाती है.....

प्र-3,61

154. पहले तो मुमुक्षु भगवान को खोजते थे, पर आज तो भगवान मुमुक्षु को खोजते हैं....

प्र-3,62

155. ऐसे साधु से अलग होने पर नरक में पड़ने जैसा दुःख महसूस होना चाहिए। ऐसा दुःख नहीं होता तब तक सत्पुरुष में जीव बँधा ही कहाँ है? और जब तक सत्पुरुष में जीव बँधा नहीं है, तब तक हम लोक, भोग, देह के अनुरूप हो जाते हैं। यूं कहकर कहा कि—हमें तो हजारों क्रियाएं करनी पड़ती हैं, तब भी पलक झपकें इतनी पल भी भगवान भूलें तो सिर फट जाये। तब किसी ने पूछा कि हजारों क्रिया करवाओ व तैलधारा वृत्ति भगवान में अखंड रखो—यह कैसे? तब स्वामी बोले कि—तुम तुम्हारी देह को भूल जाते हो?... अगर तुम तुम्हारी देह को भूलते होओ तो मैं महाराज की मूर्ति भूलूँ। जैसे मछली जल में चलती फिरती है, क्रीडा करती है वैसे ही हम बोलते हैं, चलते हैं, क्रिया करते हैं पर भगवान को भूलकर तो कोई भी क्रिया करते ही नहीं। पर जो यह नहीं समझता, उसे तो बड़ों में दोष नजर आता है कि खुद परेशान होते हैं और दूसरों को भी परेशान करते हैं। ऐसे दोष देखने वाला कोटि कल्प तक निवृत्ति को पाता नहीं है, यह सिद्धान्त की बात है।

प्र-3,65

156. चाहे कितना बड़ा शास्त्री हो, पुराणी हो इस प्रत्यक्ष भगवान व इस प्रत्यक्ष संत, उनकी पहचान नहीं हुई वे खीजड़े जैसे है।.....उनके संग ठण्डक सुख प्राप्त नहीं होगा। और विद्या भी चाहे अधिक न प्राप्त की हो, उम्र भी छोटी हो कुल भी ऊँचा न हो पर इस प्रत्यक्ष भगवान के प्रति निष्ठा हो गई और इस साधु की पहचान हो गई वह तो आम जैसा है। उसके संग ठण्डक प्राप्त कर पायेंगे व सुखी हो जायेंगे।..... इसलिए भगवान के भक्त को पहचान कर उसका संग करना, जिससे आखिरी जन्म हो जाये और ऐसे न मिले तो दूसरे तो अनन्त जन्म उत्पन्न करवायें ऐसे हैं।

प्र-3,68

157. आज तो हमें अलभ्य लाभ मिला है ऐसा मानना; जिन्हें मरने के बाद पाना था, वह तो देह रहते हुए ही मिले हैं, पर मरकर पाना ऐसा नहीं है। जैसा महाराज ने कहा है कि 'देह धरने का निमित्त तो नहीं है, पर कोई कारण उत्पन्न करके इन संतों के बीच ही जन्म मिले ऐसी ही इच्छा मैं रखता हूँ।' यूँ कहकर हमें सिखाया, और ऐसा देह तो हमें मिला है, सो समागम कर लेना।

प्र-3,69

जन्म-कर्म च मे दिव्यं—

करखड़ी गाँव में गुरुहरि योगीजी महाराज रात को बारह बजे स्नान कर रहे थे। एक युवक ने कहाः

'हम सब का रात को बारह बजे सोने का ही नियम बन गया है।'

गुरुहरि योगीजी महाराज बोले किः

'क्या करें? दुःख है। सो रात को लेट्रीन करने व स्नान करने जाना पड़ता है।'

तब वह युवक बोलाः

'आप क्यों दुःख लेकर घूमते हो?'

गुरुहरि योगीजी महाराज हँसकर बोलेः

'सब नदियों का पानी समुद्र में ही आकर इकट्ठा होगा न?' (अर्थात् सबके दुःख ऐसे प्रभु रखे संत स्वयं की देह पर ही झेल लेते हैं।)

तब उस युवक ने कहा किः

'स्वामी आप सबको दुःख बाँट दो।'

स्वामिश्री यह सुनकर बोलेः

'कोई यहाँ खड़ा नहीं रहेगा। देखो न श्रीजी महाराज ने रामपत्तर नहीं माँगा क्या? महाराज ने अपने गुरु रामानंदस्वामी से माँगा था कि मेरे भक्त को अगर एक बिच्छू का डंक हो तो मेरे रोम-रोम में बिच्छू के डंक का दर्द हो जाये और मेरे आश्रित भक्त के नसीब में यदि प्रारब्धवश रामपत्तर (भीख माँगना) लिखा हो तो वह मुझे मिले पर मेरे भक्त को नहीं।' 'बस, यह बात भी ऐसी है।'

ऐसे गुणातीत स्वरूप की करुणा की, प्रीति की कल्पना भी हम क्या कर पायेंगे जिन्होंने हमारे सुखों में नहीं, बल्कि दुःखों से भागीदारी की....प.पू. काकाजी कई बार कहते थे—''आपके सुख आपको मुबारक हों, आपके दुःख मुझे दे जाइये''—किन्तु हम हमारी मायिक दृष्टि के आवरणों के कारण इन दिव्य पुरुषों को पहचान नहीं पाते और अपनी इस अज्ञानता के कारण ही उनकी करियाण योजना में साथ नहीं दे पाते। गुणातीत स्वरूपों हम में सच्ची सूझ प्रगटायें—ऐसी प्रार्थना।

—और श्रीजी महाराज ने कहा—

सद्. गोपालानंदस्वामी ने पूछा कि ''धर्म, ज्ञान, वैराग्यसहित भक्ति का बल वृद्धि को किस प्रकार प्राप्त होता है?''

श्रीजी महाराज बोले—उसके चार उपाय हैं। एक तो पवित्र देश, दूसरा अच्छा काल, तीसरी शुभ क्रिया व चौथा सत्पुरूष का संग। उनमें क्रिया की सामर्थ्य तो कम है; पर देश, काल व संग का कारण विशेष रहता है। क्योंकि, जहाँ पवित्र देश, पवित्र काल हो और आप जैसे संत का समागम हो, वहाँ क्रिया शुभ ही होगी। पर यदि अपवित्र (बूरा) देश हो व अशुभकाल हो और वेश्याओं एवं शराब व माँस खाने पीने वालों का संग हो जाये, तो वहाँ क्रिया भी अशुभ ही होती है; इसलिये पवित्र देश में ही रहना चाहिये और अशुभ काल चल रहा हो तो वहाँ से इधर-उधर खिसक जाना चाहिये। संग भी प्रभु के भक्तों व पंच वर्तमानयुक्त ऐसे ब्रह्मज्ञानी साधु का करना चाहिये। तब वह हरिभक्त को परमेश्वर की भक्ति का बल अतिशय वृद्धि को प्राप्त होता है।

वच.ग. प्रथम—29

31 दिसम्बर 1819, शनिवार

व्रतोत्सवसूची

1.	दि.	28.11.90	बुधवार	एकादशी, व्रत
2.	दि.	12.12.90	बुधवार	एकादशी, व्रत
3.	दि.	16.12.90	रविवार	धनुर्मास प्रारम्भ
4.	दि.	31.12.90	सोमवार	पौषीपूर्णिमा,मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी का दीक्षादिन

PUBLISHED BY SADHU MUKUNDJIVANDAS FOR YOGI DIVINE SOCIETY,
A 103, Ashok vihar-III, Swaminararan Marg. Kakaji Lane,
Delhi-110 052. (India) Tel. : 7229327, 7128838
Printed at R.P. Printers, Shahadra, Delhi-110032